اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَ

करने[31] और कुछ **अल्लाह** की राह में लड़ते होंगे[32] तो जितना कुरआन मुयस्सर हो पढ़ो[33] और

اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۭ وَمَا

नमाज़ क़ाइम रखो[34] और ज़कात दो और **अल्लाह** को अच्छा क़र्ज़ दो[35] और

تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۭ

अपने लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे

ع ٢٠ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

और **अल्लाह** से बख़्शिश मांगो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है

اٰياتها ٥٦ ﴿٧٤﴾ سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ ﴿٤﴾ ركوعاتها ٢

सूरए मुद्दस्सिर मक्किय्या है, इस में छप्पन आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۙ ﴿١﴾ قُمْ فَاَنْذِرْ ۖ ﴿٢﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۖ ﴿٣﴾ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۖ ﴿٤﴾

ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले[2] खड़े हो जाओ[3] फिर डर सुनाओ[4] और अपने रब ही की बड़ाई बोलो[5] और अपने कपड़े पाक रखो[6]

फ़रमाया। **मस्अला :** इस आयत से नमाज़ में मुत़्लक़ क़िराअत की फ़र्ज़िय्यत साबित हुई। **मस्अला :** अक़ल दरजए क़िराअते मफ़रूज़ एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें हैं। **31 :** या'नी तिजारत या त़लबे इल्म के लिये **32 :** इन सब पर रात का क़ियाम दुश्वार होगा **33 :** इस से पहला हुक्म मन्सूख़ किया गया और येह भी पन्जगाना नमाज़ों से मन्सूख़ हो गया। **34 :** यहां नमाज़ से फ़र्ज़ नमाज़ें मुराद हैं। **35 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इस क़र्ज़ से मुराद ज़कात के सिवा राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है सिलए रेह़मी में और मेहमान दारी में और येह भी कहा गया कि इस से तमाम सदक़ात मुराद हैं जिन्हें अच्छी त़रह़ माले ह़लाल से ख़ुशदिली के साथ राहे ख़ुदा में ख़र्च किया जाए। **1 :** सूरए मुद्दस्सिर मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, छप्पन 56 आयतें, दो सो पचपन 255 कलिमे, एक हज़ार दस 1010 ह़र्फ़ हैं। **2 :** येह ख़ित़ाब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं कोहे ह़िरा पर था कि मुझे निदा की गई ''يَا مُحَمَّدُ اِنَّکَ رَسُوْلُ اللّٰهِ'' मैं ने अपने दाएं बाएं देखा कुछ न पाया, ऊपर देखा एक शख़्स आस्मान ज़मीन के दरमियान बैठा है (या'नी वोही फ़िरिश्ता जिस ने निदा की थी) येह देख कर मुझ पर रो'ब हुवा और मैं ख़दीजा के पास आया और मैं ने कहा कि मुझे बाला पोश उढ़ाओ, उन्हों ने उढ़ा दिया तो जिब्रील आए और उन्हों ने कहा : ''يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ'' **3 :** अपनी ख़्वाब गाह से **4 :** क़ौम को अ़ज़ाबे इलाही का ईमान न लाने पर **5 :** जब येह आयत नाज़िल हुई तो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अल्लाहु अक्बर फ़रमाया, ह़ज़रते ख़दीजा ने भी हुज़ूर की तक्बीर सुन कर तक्बीर कही और ख़ुश हुईं और उन्हें यक़ीन हुवा कि वह़्य आई। **6 :** हर त़रह़ की नजासत से क्यूं कि नमाज़ के लिये त़हारत ज़रूरी है और नमाज़ के सिवा और ह़ालतों में भी कपड़े पाक रखना बेहतर है या येह मा'ना हैं कि अपने कपड़े कोताह कीजिये ऐसे दराज़ न हों जैसी कि अ़रबों की आ़दत है क्यूं कि बहुत ज़ियादा दराज़ होने से चलने फिरने में नजिस होने का एह़तिमाल रहता है।

www.dawateislami.net

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿۵﴾ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ﴿۶﴾ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ﴿۷﴾ فَاِذَا نُقِرَ

और बुतों से दूर रहो और ज़ियादा लेने की निय्यत से किसी पर एहसान न करो[7] और अपने रब के लिये सब्र किये रहो[8] फिर जब सूर

فِي النَّاقُوْرِ ﴿۸﴾ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ﴿۹﴾ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ

फूंका जाएगा[9] तो वोह दिन कर्रा (सख़्त) दिन है काफ़िरों पर आसान

يَسِيْرٍ ﴿۱۰﴾ ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ﴿۱۱﴾ وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ﴿۱۲﴾

नहीं[10] उसे मुझ पर छोड़ जिसे मैं ने अकेला पैदा किया[11] और उसे वसीअ़ माल दिया[12]

وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ﴿۱۳﴾ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ﴿۱۴﴾ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ﴿۱۵﴾

और बेटे दिये सामने हाज़िर रहते[13] और मैं ने उस के लिये त़रह़ त़रह़ की तय्यारियां कीं[14] फिर येह त़मअ़ करता है कि मैं और ज़ियादा दूं[15]

كَلَّا ۭ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ﴿۱۶﴾ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ﴿۱۷﴾ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَ

हरगिज़ नहीं[16] वोह तो मेरी आयतों से इनाद रखता है क़रीब है कि मैं उसे आग के पहाड़ सऊद पर चढ़ाऊं बेशक वोह सोचा और

قَدَّرَ ﴿۱۸﴾ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿۱۹﴾ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿۲۰﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿۲۱﴾

दिल में कुछ बात ठहराई तो उस पर ला'नत हो कैसी ठहराई फिर उस पर ला'नत हो कैसी ठहराई फिर नज़र उठा कर देखा

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿۲۲﴾ ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿۲۳﴾ فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ

फिर तेवरी चढ़ाई (माथे पर बल डाले) और मुंह बिगाड़ा फिर पीठ फेरी और तकब्बुर किया फिर बोला येह तो वोही जादू है अगलों

يُّؤْثَرُ ﴿۲۴﴾ اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿۲۵﴾ سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ﴿۲۶﴾ وَمَآ

से सीखा येह नहीं मगर आदमी का कलाम[17] कोई दम जाता है कि मैं उसे दोज़ख़ में धंसाता हूं और

7 : या'नी जैसे कि दुन्या में हदिये और न्योते (शादी वग़ैरा में रक़म या दूसरे तह़ाइफ़) देने का दस्तूर है कि देने वाला येह ख़याल करता है कि जिस को मैं ने दिया है वोह इस से ज़ियादा मुझे दे देगा, इस क़िस्म के न्योते और हदिय्ये शरअ़न जाइज़ हैं मगर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को इस से मन्अ़ फ़रमाया गया क्यूं कि शाने नुबुव्वत बहुत अर्फ़अ़ो आ'ला है और इस मन्सबे आ़ली के लाइक़ येही है कि जिस को जो दें वोह मह़्ज़ करम हो, उस से लेने या नफ़्अ़ ह़ासिल करने की निय्यत न हो। **8 :** अवामिर व नवाही और उन ईज़ाओं पर जो दीन की ख़ातिर आप को बरदाश्त करनी पड़ीं। **9 :** मुराद इस से बक़ौले सह़ीह़ नफ़्ख़ए सानिया है। **10 :** इस में इशारा है कि वोह दिन ब फ़ज़्ले इलाही मोमिनीन पर आसान होगा। **11 :** उस की मां के पेट में बिग़ैर माल व औलाद के। **शाने नुज़ूल :** येह आयत वलीद बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी के ह़क़ में नाज़िल हुई, वोह अपनी क़ौम में वह़ीद के लक़ब से मुलक़्क़ब था। **12 :** खेतियां और कसीर मवेशी और तिजारतें। मुजाहिद से मन्क़ूल है कि वोह एक लाख दीनार नक़्द की हैसिय्यत रखता था और त़ाइफ़ में इस का ऐसा बड़ा बाग़ था जो साल के किसी वक़्त फलों से ख़ाली न होता था। **13 :** जिन की ता'दाद दस थी और चूं कि मालदार थे उन्हें कस्बे मआ़श के लिये सफ़र की ह़ाजत न थी, इस लिये सब बाप के सामने रहते, उन में से तीन मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए ख़ालिद और हिशाम और वलीद इब्ने वलीद। **14 :** जाह भी दिया और रियासत भी अ़त़ा फ़रमाई, ऐ़श भी दिया और तूले उ़म्र भी **15 :** बा वुजूद नाशुक्री के **16 :** येह न होगा, चुनान्चे, इस आयत के नुज़ूल के बा'द वलीद के माल व औलाद व जाह में कमी शुरूअ़ हुई यहां तक कि हलाक हो गया। **17** **शाने नुज़ूल :** जब "حٰمٓ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ" नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मस्जिद में तिलावत फ़रमाई, वलीद ने सुना और उस क़ौम की मजलिस में आ कर उस ने कहा

www.dawateislami.net

اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ۭ ﴿٢٧﴾ لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾ۚ لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ۖۚ عَلَيْهَا

तुम ने क्या जाना दोज़ख़ क्या है न छोड़े न लगी रखे[18] आदमी की खाल उतार लेती है[19] उस पर

تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾ؕ وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا

उन्नीस दारोग़ा हैं[20] और हम ने दोज़ख़ के दारोग़ा न किये मगर फ़िरिश्ते और हम ने

عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَ

उन की येह गिनती न रखी मगर काफ़िरों की जांच को[21] इस लिये कि किताब वालों को यक़ीन आए[22] और

يَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

ईमान वालों का ईमान बढ़े[23] और किताब वालों और मुसल्मानों को कोई

وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ

शक न रहे और दिल के रोगी[24] और काफ़िर कहें

مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ

इस अचम्बे (तअ़ज्जुब) की बात में **अल्लाह** का क्या मत्लब है यूंही **अल्लाह** गुमराह करता है जिसे चाहे और हिदायत फ़रमाता है

कि ख़ुदा की क़सम मैं ने मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अभी एक कलाम सुना न वोह आदमी का न जिन्न का, बख़ुदा उस में अ़जीब शीरीनी और ताज़गी और फ़वाइद व दिलकशी है, वोह कलाम सब पर ग़ालिब रहेगा। क़ुरैश को उस की इन बातों से बहुत ग़म हुवा और उन में मश्हूर हो गया कि वलीद आबाई दीन से बरगश्ता हो गया (फिर गया), अबू जह्ल ने वलीद को हमवार करने का ज़िम्मा लिया और उस के पास आ कर बहुत ग़मज़दा सूरत बना कर बैठ गया, वलीद ने कहा : क्या ग़म है ? अबू जह्ल ने कहा : ग़म कैसे न हो तू बूढ़ा हो गया है, क़ुरैश तेरे ख़र्च के लिये रुपिया जम्अ़ कर देंगे, उन्हें ख़याल है कि तू ने मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के कलाम की ता'रीफ़ इस लिये की है कि तुझे उन के दस्तर ख़्वान का बचा खाना मिल जाए, इस पर उसे बहुत त़ैश आया और कहने लगा कि क्या क़ुरैश को मेरे मालो दौलत का ह़ाल मा'लूम नहीं है और क्या मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) और उन के अस्ह़ाब ने कभी सेर हो कर खाना भी खाया है ? उन के दस्तर ख़्वान पर क्या बचेगा ? फिर अबू जह्ल के साथ उठा और क़ौम में आ कर कहने लगा तुम्हारा ख़याल है कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) मज्नून हैं क्या तुम ने उन में कभी दीवानगी की कोई बात देखी ? सब ने कहा : हरगिज़ नहीं, कहने लगा : तुम उन्हें काहिन समझते हो, क्या तुम ने उन्हें कभी कहानत करते देखा है ? सब ने कहा : नहीं, कहा : तुम उन्हें शाइ़र गुमान करते हो, क्या तुम ने कभी उन्हें शे'र कहते पाया ? सब ने कहा : नहीं, कहने लगा : तुम उन्हें कज़्ज़ाब कहते हो, क्या तुम्हारे तजरिबे में कभी उन्हों ने झूट बोला ? सब ने कहा : नहीं और क़ुरैश में आप का सिद्क़ व दियानत ऐसा मश्हूर था कि क़ुरैश आप को अमीन कहा करते थे, येह सुन कर क़ुरैश ने कहा फिर बात क्या है ? तो वलीद सोच कर बोला कि बात येह है कि वोह जादूगर हैं, तुम ने देखा होगा कि उन की बदौलत रिश्तेदार रिश्तेदार से बाप बेटे से जुदा हो जाते हैं, बस येही जादूगर का काम है और जो क़ुरआन वोह पढ़ते हैं वोह दिल में असर कर जाता है इस का बाइ़स येह है कि वोह जादू है, इस आयते करीमा में इस का ज़िक्र फ़रमाया गया। **18 :** या'नी न किसी मुस्तह़िक़्क़े अ़ज़ाब को छोड़े न किसी के जिस्म पर गोश्त पोस्त खाल लगी रहने दे बल्कि मुस्तह़िक़्क़े अ़ज़ाब को गिरिफ़्तार करे और गिरिफ़्तार को जलाए और जब जल जाएं फिर वैसे ही कर दिये जाएं। **19 :** जला कर। **20 :** फ़िरिश्ते। एक मालिक और अठ्ठारह उन के साथी। **21 :** कि हिक्मते इलाही पर ए'तिमाद न कर के इस ता'दाद में कलाम करें और कहें उन्नीस क्यूं हुए ? **22 :** या'नी यहूद को येह ता'दाद अपनी किताबों के मुवाफ़िक़ देख कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सिद्क़ का यक़ीन ह़ासिल हो **23 :** या'नी अहले किताब में से जो ईमान लाए उन का ए'तिक़ाद सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ और ज़ियादा हो और जान लें कि हुज़ूर जो कुछ फ़रमाते हैं वोह वह़्ये इलाही है इस लिये कुतुबे साबिक़ा से मुत़ाबिक़ होती है **24 :** जिन के दिलों में निफ़ाक़ है।

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ؕ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى

जिसे चाहे और तुम्हारे रब के लश्करों को उस के सिवा कोई नहीं जानता और वोह[25] तो नहीं मगर आदमी

لِلْبَشَرِ ﴿۳۱﴾ كَلَّا وَالْقَمَرِ ۙ﴿۳۲﴾ وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۙ﴿۳۳﴾ وَالصُّبْحِ اِذَاۤ اَسْفَرَ ۙ﴿۳۴﴾ ع ۱۵

के लिये नसीहत हां हां चांद की क़सम और रात की जब पीठ फेरे और सुब्ह की जब उजाला डाले[26]

اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ۙ﴿۳۵﴾ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ۙ﴿۳۶﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ

बेशक दोज़ख़ बहुत बड़ी चीज़ों में की एक है आदमियों को डराओ उसे जो तुम में चाहे कि

يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ؕ﴿۳۷﴾ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۙ﴿۳۸﴾ اِلَّاۤ اَصْحٰبَ

आगे आए[27] या पीछे रहे[28] हर जान अपनी करनी में गिरवी है मगर दहनी

الْيَمِيْنِ ؕ﴿۳۹﴾ فِيْ جَنّٰتٍ ۛؕ يَتَسَآءَلُوْنَ ۙ﴿۴۰﴾ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۙ﴿۴۱﴾ مَا سَلَكَكُمْ مع

तरफ़ वाले[29] बाग़ों में पूछते हैं मुजरिमों से तुम्हें क्या बात दोज़ख़

فِيْ سَقَرَ ﴿۴۲﴾ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿۴۳﴾ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۙ﴿۴۴﴾

में ले गई वोह बोले हम[30] नमाज़ न पढ़ते थे और मिस्कीन को खाना न देते थे[31]

وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۙ﴿۴۵﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۙ﴿۴۶﴾

और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्रें करते थे और हम इन्साफ़ के दिन को[32] झुटलाते रहे

حَتّٰۤى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ؕ﴿۴۷﴾ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ؕ﴿۴۸﴾ فَمَا لَهُمْ

यहां तक कि हमें मौत आई तो उन्हें सिफ़ारिशियों की सिफ़ारिश काम न देगी[33] तो उन्हें क्या हुवा

عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۙ﴿۴۹﴾ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۙ﴿۵۰﴾ فَرَّتْ مِنْ

नसीहत से मुंह फेरते हैं[34] गोया वोह भड़के हुए गधे हों कि शेर से

قَسْوَرَةٍ ؕ﴿۵۱﴾ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۙ﴿۵۲﴾

भागे हों[35] बल्कि उन में का हर शख़्स चाहता है कि खुले सहीफ़े उस के हाथ में दे दिये जाएं[36]

25 : या'नी जहन्नम और उस की सिफ़त या आयाते क़ुरआन 26 : ख़ूब रोशन हो जाए 27 : ख़ैर या जन्नत की तरफ़ ईमान ला कर 28 : कुफ़्र इख़्तियार कर के और बुराई व अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो। 29 : या'नी मोमिनीन, वोह गिरवी नहीं, वोह नजात पाने वाले हैं और उन्हों ने नेकियां कर के अपने आप को आज़ाद करा लिया है, वोह अपने रब की रह़मत से मुन्तफ़ेअ़ हैं। 30 : दुन्या में 31 : या'नी मसाकीन पर सदक़ा न करते थे 32 : जिस में आ'माल का हिसाब होगा और जज़ा दी, जाएगी मुराद इस से रोज़े क़ियामत है 33 : या'नी अम्बिया, मलाएका, शुहदा

www.dawateislami.net

كَلَّا بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿۵۳﴾ كَلَّاۤ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿۵۴﴾ فَمَنْ شَآءَ

हरगिज़ नहीं बल्कि उन को आख़िरत का डर नहीं[37] हां हां बेशक वोह[38] नसीहत है तो जो चाहे

ذَكَرَهٗ ﴿۵۵﴾ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى

उस से नसीहत ले और वोह क्या नसीहत मानें मगर जब **अल्लाह** चाहे वोही है डरने के लाइक़

وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿۵۶﴾

और उसी की शान है मग़्फ़िरत फ़रमाना

ايَاتُهَا ۴۰ | ﴿۷۵﴾ سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ ۳۱ | رُكُوْعَاتُهَا ۲

सूरए क़ियामह मक्किय्या है, इस में चालीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

لَاۤ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ﴿۱﴾ وَلَاۤ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿۲﴾ اَيَحْسَبُ

रोज़े क़ियामत की क़सम याद फ़रमाता हूं और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर बहुत मलामत करे[2] क्या आदमी[3]

الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ﴿۳﴾ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰۤى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿۴﴾

येह समझता है कि हम हरगिज़ उस की हड्डियां जम्अ़ न फ़रमाएंगे क्यूं नहीं हम क़ादिर हैं कि उस के पोर ठीक बना दें[4]

सालिहीन जिन्हें **अल्लाह** तआला ने शाफ़ेअ़ किया है वोह ईमानदारों की शफ़ाअ़त करेंगे काफ़िरों की शफ़ाअ़त न करेंगे तो जो ईमान नहीं रखते उन्हें शफ़ाअ़त भी मुयस्सर न आएगी। **34 :** या'नी मवाइज़े क़ुरआन से ए'राज़ करते हैं। **35 :** या'नी मुश्रिकीन नादानी व बे वुक़ूफ़ी में गधे की मिस्ल हैं जिस त़रह शेर को देख कर वोह भागता है इसी त़रह येह नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तिलावते क़ुरआन सुन कर भागते हैं **36 :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि हम हरगिज़ आप की इत्तिबाअ़ न करेंगे जब तक कि हम में से हर एक के पास **अल्लाह** तआला की त़रफ़ से एक एक किताब न आए जिस में लिखा हो कि येह **अल्लाह** तआला की किताब है फ़ुलां बिन फ़ुलां के नाम, हम इस में तुम्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के इत्तिबाअ़ का हुक्म देते हैं। **37 :** क्यूं कि अगर उन्हें आख़िरत का ख़ौफ़ होता तो अदिल्ला क़ाइम होने और मो'जिज़ात ज़ाहिर होने के बा'द इस क़िस्म की सरकशाना हीला बाज़ियां न करते। **38 :** क़ुरआन शरीफ़ **1 :** सूरए क़ियामह मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, चालीस 40 आयतें, एक सो निनानवे 199 कलिमे, छ[6] सो बानवे 692 हर्फ़ हैं। **2 :** बा वुजूद मुत्तक़ी व कसीरुत्ताअ़त होने के कि तुम मरने के बा'द ज़रूर उठाए जाओगे। **3 :** यहां आदमी से मुराद काफ़िर मुन्किरे बअ़्स है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़दी बिन रबीआ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर मैं क़ियामत का दिन देख भी लूं जब भी न मानूं और आप पर ईमान न लाऊं, क्या **अल्लाह** तआला बिखरी हुई हड्डियां जम्अ़ कर देगा ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई जिस के मा'ना येह हैं कि क्या इस काफ़िर का येह गुमान है कि हड्डियां बिखरने और गलने और रेज़ा रेज़ा हो कर मिट्टी में मिलने और हवाओं के साथ उड़ कर दूर दराज़ मक़ामात में मुन्तशिर हो जाने से ऐसी हो जाती हैं कि उन का जम्अ़ करना काफ़िर हमारी क़ुदरत से बाहर समझता है, येह ख़याले फ़ासिद उस के दिल में क्यूं आया और उस ने क्यूं नहीं जाना कि जो पहली बार पैदा करने पर क़ादिर है वोह मरने के बा'द दोबारा पैदा करने पर ज़रूर क़ादिर है। **4 :** या'नी उस की उंग्लियां जैसी थीं बिग़ैर फ़र्क़ के वैसी ही कर दें और उन की हड्डियां उन के मौक़अ़ पर पहुंचा दें, जब छोटी छोटी हड्डियां इस त़रह़ तरतीब दे दी जाएं तो बड़ी का क्या कहना।